दिव्य कृपा

असाधारण कृपा की अपेक्षा करें। लोगों ने जो आपके बारे में उम्मीद की है, परमेश्वर उसके विपरीत कार्य करेंगे।

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2024

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं। आर्थिक साझेदारी

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें

उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org

(Hindi – Divine Favor)

दिव्य कृपा

असाधारण कृपा की अपेक्षा करें। लोगों ने जो आपके बारे में उम्मीद की है, परमेश्वर उसके विपरीत कार्य करेंगे।

विषयसूची

1. दिव्य कृपा क्या है? 1

2. क्या होता है जब हम पर परमेश्वर की दिव्य कृपा होती है? 9

3. हम पर परमेश्वर की कृपा होने के क्या करण हैं? 11

4. परमेश्वर की कृपा बनाए रखना 20

1
दिव्य कृपा क्या है?

दिव्य कृपा वह है जो परमेश्वर अपने लोगों पर बनाए रखते हैं। यह उन आशीषों में से एक है जो वह हमें प्रदान करते हैं। इस सरल अध्ययन में हम यह जानेंगे कि दिव्य कृपा क्या होती है, यह हमारे जीवन में क्या लाती है, और दिव्य कृपा पाने के लिए हम क्या कर सकते हैं।

- दिव्य कृपा क्या है?
- क्या होता है जब हम पर परमेश्वर की दिव्य कृपा होती हैं?
- हम पर परमेश्वर की कृपा होने के क्या करण हैं?

दिव्य कृपा परमेश्वर की ओर से एक वरदान है जो एक व्यक्ति पर होती है, और यह उस व्यक्ति को लोगों, स्थानों या चीजों तक पहुँचने हेतु रास्ता प्रदान करती है तथा असामान्य अवसर, प्रसन्नता और सुधार हेतु दिव्य हस्तक्षेप प्रदान करती है।

बाइबल कहती है कि परमेश्वर पक्षपात नहीं करते (रोमियों 2:11; प्रेरितों के काम 10:34)।

रोमियों 2:11
क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता।

भजन संहिता 34:8
परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है!
क्या ही धन्य है वह पुरूष जो उसकी शरण लेता है।

प्रेरितों के काम 10:34
तब पतरस ने मुंह खोलकर कहा; अब मुझे निश्चय हुआ,

कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता।

परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति से समान रूप से प्रेम करते हैं और किसी एक व्यक्ति विशेष पर अपनी कृपा नहीं करते हैं। । फिर भी, मनुष्यों के साथ व्यवहार करते समय हम पाते हैं कि वह कुछ लोगों पर और समूहों पर किसी निश्चित समय में, या विशेष मौसम में या उनके जीवन के किसी विशेष पलों में अपनी कृपाष्टि करते हैं। और मैं इसी के बारे में आपको जागृत करना चाहता हूँ, ताकि हम परमेश्वर की दिव्य कृपा पाने की अपेक्षा कर सकें।

लोगों पर परमेश्वर की कृपादृष्टि होने के उदाहरण

नहेम्याह

नहेम्याह एक ऐसा उदाहरण है जिस पर परमेश्वर की दिव्य कृपा हुई। बाइबल में बाबुल के राजा नबुकदनेस्सर की कहानी का उल्लेख किया गया है, जिसने यरूशलेम पर हमला किया और उस पर विजय प्राप्त की (नहेम्याह 1,2)। उसने मंदिर और शहरपनाह (नगर की सुरक्षा दीवार) तोड़ डाली और बहुत से लोगों को बंदी बनाकर बाबुल ले गया। वहाँ कुछ परिवर्तन हुआ। फारसी साम्राज्य ने बाबुल साम्राज्य पर कब्जा कर लिया। उस समय परमेश्वर के लोग उनकी अधीनता में थे और नहेम्याह राजा के भवन में एक पिलाने वाले के रूप में सेवा कर रहा था। वह राजा को वही परोसता था जो राजा पीना चाहते थे। यरूशलेम में जो कुछ हो रहा था उस बारे में महल में नहेम्याह के पास एक रिपोर्ट आई। उसका हृदय व्याकुल हो गया, और उसे लगा कि उसे सच में यरूशलेम के लिए कुछ करना चाहिये। उसने अपने आप से कहा, "मुझे वापस जाकर यरूशलेम की शहरपनाह को फिर से बनाना चाहिये," और वह प्रार्थना करने लगा।

नहेम्याह 1:11
हे प्रभु विनती यह है, कि तू अपने दास की प्रार्थना पर, और अपने उन दासों की प्रार्थना पर, जो तेरे नाम का भय मानना चाहते हैं, कान लगा, और आज अपने दास का काम सफल कर, और उस पुरुष को उस पर दयालु कर। (मैं तो राजा का पियाऊ था।)

तो, नहेम्याह ने प्रार्थना की और राजा की दृष्टि में परमेश्वर से दया मांगी। यह दिव्य कृपादृष्टि पाने के लिए प्रार्थना थी। कुछ दिनों बाद नहेम्याह महल में वापस चला गया।

नहेम्याह 2:1-8
1 अर्तक्षत्र राजा के बीसवें वर्ष के नीसान नामक महीने में, जब उसके सामने दाखमधु था, तब मैं ने दाखमधु उठाकर राजा को दिया। इस से पहले मैं उसके सामने कभी उदास न हुआ था।
2 तब राजा ने मुझ से पूछा, "तू तो रोगी नहीं है, फिर तेरा मुँह क्यों उतरा है? यह तो मन ही की उदासी होगी। "तब मैं अत्यन्त डर गया।
3 मैं ने राजा से कहा, "राजा सदा जीवित रहे! जब वह नगर जिसमें मेरे पुरखाओं की कबरें हैं, उजाड़ पड़ा है और उसके फाटक जले हुए हैं, तो मेरा मुँह क्यों न उतरे?"
4 राजा ने मुझ से पूछा, "फिर तू क्या माँगता है?" तब मैंने स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करके राजा से कहा,
5 "यदि राजा को भाए, और तू अपने दास से प्रसन्न हो, तो मुझे यहूदा और मेरे पुरखाओं की कब्रों के नगर को भेज, ताकि मैं उसे बनाऊँ।"
6 तब राजा ने जिसके पास रानी भी बैठी थी, मुझ से पूछा, "तू कितने दिन तक यात्रा में रहेगा? और कब लौटेगा?" अत: राजा मुझे भेजने को प्रसन्न हुआ; और मैंने उसके लिये एक समय नियुक्त किया।
7 फिर मैंने राजा से कहा, "यदि राजा को भाए, तो महानद के पार के अधिपतियों के लिये इस आशय की चिट्ठियाँ मुझे दी जाएँ कि जब तक मैं यहूदा को न पहुँचूँ, तब तक वे मुझे अपने अपने देश में से होकर जाने दें;
8 और सरकारी जंगल के रखवाले आसाप के लिये भी इस आशय की चिट्ठी मुझे दी जाए ताकि वह मुझे भवन से लगे हुए राजगढ़ की कड़ियों के लिये, और शहरपनाह के और उस घर के लिये, जिसमें मैं जाकर रहूँगा, लकड़ी दे।" मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर थी, इसलिये राजा ने यह विनती स्वीकार कर ली।

कोशिश कीजिये और समझिये कि नहेम्याह ने राजा से क्या कहा। उसने अनिवार्य रूप से राजा से कहा कि वह राजा के शत्रुओं के पास वापस जाना चाहता है और उन्हें राजा के विरूद्ध मजबूत बनने में उनकी मदद करना चाहता है, क्योंकि उन दिनों में, शहरपनाह (नगर की सुरक्षा दीवार) रक्षा के प्राथमिक तंत्रों में से एक थी। अगर उनकी शहरपनाह मजबूत होंगी, तो वे शत्रुओं के विरूद्ध अपना बचाव कर सकते थे। यह नहेम्याह की ओर से एक अपमानजनक विनती थी, फिर भी राजा ने उसे यह सब प्रदान किया। और याद रखिये नहेम्याह कोई राजनेता या प्रभावशाली व्यक्ति नहीं था, बल्कि महल में राजा की सेवा करने वाला सिर्फ एक सेवक था। नहेम्याह ने संक्षेप में कहा, *"मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर थी, इसलिये राजा ने यह विनती स्वीकार कर ली"* (नहेम्याह 2:8)। इसलिए, नहेम्याह ने घोषणा की कि राजा ने इन सभी विनतियों को स्वीकार कर लिया है, क्योंकि परमेश्वर का हाथ उस पर था। और इसलिए, नहेम्याह यरूशलेम में वापस आया और लोगों से कहा कि वे उस संकट को देखें जिसमें वे थे और यरूशलेम कैसे बरबाद हो रहा था।

नहेम्याह 2:18
फिर मैंने उनको बतलाया, कि मेरे परमेश्वर की कृपादृष्टि मुझ पर हुई और राजा ने मुझ से क्या-क्या बातें कही थीं। तब उन्होंने कहा, "आओ, हम कमर बाँधकर बनाने लगें।" और उन्होंने इस भले काम को करने के लिये हियाव बाँध लिया।

नहेम्याह ने न केवल इस तरह से परमेश्वर की कृपादृष्टि का अनुभव किया, बल्कि अन्य लोगों के साथ इस तरह की कृपादृष्टि के बारे में भी गवाही दी। अतः ऐसा हुआ कि नहेम्याह पर परमेश्वर की कृपादृष्टि ने लोगों को उसकी ओर आकर्षित किया। अन्य लोग नहेम्याह से जुड़ना चाहते थे और उसके मिशन का हिस्सा बनना चाहते थे! आज भी परमेश्वर की कृपादृष्टि आपके लिए और मेरे लिए भी बिल्कुल ऐसा कर सकती है!

नहेम्याह ने परमेश्वर की कृपा का अनुसरण किया और इसने अन्य लोगों के हृदय में भी ऐसा साहस लाया कि जब विरोध हुआ, तो उन सभी ने विरोध का उत्तर देते हुए कहा, *"... स्वर्ग का परमेश्वर हमारा काम सफल करेगा, इसलिये हम उसके दास कमर बाँधकर बनाएँगे ..."* (नहेम्याह 2:20)। इस प्रकार, वे जानते थे कि वे दिव्य कृपादृष्टि के मौसम में हैं और जान गए कि परमेश्वर उनके बीच में क्या कर रहे हैं। उन्होंने विश्वास किया कि परमेश्वर की कृपादृष्टि उन पर हुई है, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग क्या कहते हैं, वे उठेंगे और निर्माण करेंगे।

यूसुफ

उत्पत्ती 39 में यूसुफ की एक कहानी का उल्लेख है जिसमें उसके भाइयों ने उसे एक गुलाम के रूप में मिस्र में बेच दिया था। वहाँ, उसने पोतीपर के घर में सेवा की और बाद में उसे बन्दीगृह में डाल दिया गया।

उत्पत्ती 39:21-23
21 पर यहोवा यूसुफ के संग संग रहा और उस पर करुणा की, और बन्दीगृह के दारोगा के अनुग्रह की दृष्टि उस पर हुई।
22 इसलिये बन्दीगृह के दारोगा ने उन सब बन्दियों को, जो कारागार में थे, यूसुफ के हाथ में सौंप दिया; और जो जो काम वे वहाँ करते थे, वह उसी की आज्ञा से होता था।
23 यूसुफ के वश में जो कुछ था उसमें से बन्दीगृह के दारोगा को कोई भी वस्तु देखनी न पड़ती थी; क्योंकि यहोवा यूसुफ के साथ था; और जो कुछ वह करता था, यहोवा उसको उसमें सफलता देता था।

इसलिए, बंदीगृह में, दारोगा यूसुफ को प्रभारी होने के लिए कहता है। यह परमेश्वर की दिव्य कृपादृष्टि है। दारोगा ने एक पल के लिए भी नहीं सोचा था कि यूसुफ खुद को और अन्य सभी बंदियों को बाहर निकाल लाएगा। कल्पना कीजिये कि एक बंदी अपने ही बंदीगृह

की देखरेख कर रहा है।

प्रेरितों के काम 7:9,10
9 "कुलपतियों ने यूसुफ से डाह करके उसे मिस्र देश जानेवालों के हाथ बेचा। परन्तु परमेश्वर उसके साथ था,
10 और उसे उसके सब क्लेशों से छुड़ाकर मिस्र के राजा फ़िरौन की दृष्टि में अनुग्रह और बुद्धि प्रदान की, और उसने उसे मिस्र पर और अपने सारे घर पर हाकिम नियुक्त किया।

परमेश्वर ने यूसुफ पर कृपादृष्टि की और उसे रातोंरात बंदी से मिस्र का प्रधान मंत्री बना दिया गया। परमेश्वर की कृपादृष्टि हमारे जीवन में यही कर सकती है। एक पल में, सबकुछ बदल सकता है।

मिस्र में इस्राएल के लोग

इस्राएल के लोग 400 वर्षों तक मिस्र में गुलाम थे। परमेश्वर ने अपने मिशन की शुरुआत में मूसा से यह कहते हुए बात की, *" तब मैं मिस्रियों से अपनी इस प्रजा पर अनुग्रह करवाऊँगा; और जब तुम निकलोगे तब छूछे हाथ न निकलोगे। वरन् तुम्हारी एक एक स्त्री अपनी अपनी पड़ोसिन, और उनके घर में रहने वाली से सोने चाँदी के गहने, और वस्त्र माँग लेगी, और तुम उन्हें अपने बेटों और बेटियों को पहिनाना; इस प्रकार तुम मिस्रियों को लूटोगे,"* (निर्गमन 3:21,22)। परमेश्वर मूसा से कह रहे थे कि वह मिस्रियों की दृष्टि में इस्राएल के लोगों पर अनुग्रह करेंगे—उन्हीं मिस्रियों से जिन्होंने इन सभी वर्षों तक इस्राएलियों को गुलाम के रूप में रखा था। और वह मूसा से कह रहे थे कि जब इन लोगों को मिस्र से बाहर निकलने का समय आएगा, तो वह उन लोगों को वाचा के देश में ले जाएगा। परमेश्वर मूसा से स्पष्ट रूप से कहते हैं कि उन पर उनकी कृपादृष्टि होने के कारण, मिस्री इस्राएलियों को खाली हाथ नहीं जाने देंगे।

निर्गमन 11:3
तब यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा पर दयालु किया। इसके अतिरिक्त वह पुरुष मूसा, मिस्र देश में फ़िरौन के कर्मचारियों और साधारण लोगों की दृष्टि में अति महान था।

अचानक ही, मिस्रियों की राय, दृष्टिकोण और वे इस्राएलियों के साथ क्या करना चाहते थे, बदल गया। सबकुछ बदल गया!

निर्गमन 12:35-37
35 इस्राएलियों ने मूसा के कहने के अनुसार मिस्रियों से सोने–चाँदी के गहने और वस्त्र माँग लिये;
36 और यहोवा ने मिस्रियों को अपनी प्रजा के लोगों पर ऐसा दयालु किया कि उन्होंने जो जो माँगा वह सब उनको दिया। इस प्रकार इस्राएलियों ने मिस्रियों को लूट लिया।
37तब इस्राएली रामसेस से कूच करके सुक्कोत को चले, और बाल-बच्चों को छोड़ वे कोई छ:लाख पैदल चलने वाले पुरुष थे।

इसके अलावा, मिस्रियों की दृष्टि में परमेश्वर की दिव्य कृपादृष्टि के कारण, मिस्रियों ने इस्राएलियों को वह सब दे दिया जो वे चाहते थे। इस तरह से उन्होंने सचमुच मिस्रियों को लूट लिया। कल्पना कीजिये कि आपकी "घरेलू मदद" आ रही है और अपना सभी सोना और कपड़े आपको देने के लिए कह रही है। आप सोचेंगे कि वह पागल हो गई है। लेकिन 400 साल तक गुलामी करवाने के बाद इस्राएलियों से मिस्रियों ने यही कहा था। दिव्य कृपादृष्टि के समय में, मिस्रियों के हाथों से इस्राएलियों के हाथों में धन का हस्तांतरण हुआ। यह सब रातोंरात हुआ।

क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपके और मेरे साथ भी यही कर सकते हैं? क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपके और मेरे जीवन में उनकी दिव्य कृपादृष्टि के मौसम और कृपादृष्टि के पल भेज सकते हैं? मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर ऐसा कर सकते हैं!

समय बदल गया है। लोग बदल गए हैं। लेकिन हमारे परमेश्वर वह हैं जो अपने लोगों पर अपनी दिव्य कृपादृष्टि बनाए रखते हैं। वह अपने लोगों पर कृपादृष्टि करते हैं और ऐसी चीजों को होने देते हैं जो कभी नहीं हो पातीं।

2
क्या होता है जब हम पर परमेश्वर की दिव्य कृपा होती है?

लोगों के बीच प्रभाव

परमेश्वर की कृपादृष्टि हमें लोगों के बीच प्रभावशाली बनाती है। नहेम्याह “कुछ नहीं” था। यूसुफ एक कैदी था। इस्राएल के लोग गुलाम थे। परंतु जब परमेश्वर की कृपादृष्टि उन पर हुई, तो वे प्रभावशाली बन गए।

लोगों, स्थानों या वस्तुओं तक पहुंच

परमेश्वर की कृपादृष्टि हमें लोगों, स्थानों, और वस्तुओं तक पहुंच प्रदान करती है। जब वह हम पर कृपादृष्टि करते हैं, तो वह अचानक हमें सही लोगों तक, सही स्थानों तक, चीजों तक या धन तक पहुंच प्रदान करते हैं।

असामान्य अवसर

परमेश्वर की कृपादृष्टि हमारे जीवन में असामान्य अवसर भी लाती है—ऐसे अवसर जो दूसरों के पास नहीं होती ।

प्रशंसा लाती है

भजन संहिता 89:17
क्योंकि तू उनके बल की शोभा है,
और अपनी प्रसन्नता से हमारे सींग को ऊँचा करेगा।

"सींग" मतलब "अगुवा।" परमेश्वर की कृपा प्रसन्नता लाती है।

जीवन लाती है

जब परमेश्वर कृपा करते हैं, तो जो मर रहा है उसमें अचानक से जीवन आ जाता है। हमारे जीवन में परिस्थितियाँ तब बदलती हैं जब हम पर परमेश्वर की कृपादृष्टि होती है।

भजन संहिता 30:5
क्योंकि उसका क्रोध तो क्षण भर का होता है,
परन्तु उसकी प्रसन्नता जीवन भर की होती है।
कदाचित् रात को रोना पड़े, परन्तु सवेरे आनन्द पहुँचेगा।

भजन संहिता 30:11
तू ने मेरे लिये विलाप को नृत्य में बदल डाला;
तू ने मेरा टाट उतरवा कर मेरी कमर में आनन्द का पटुका बाँधा है,

3
हम पर परमेश्वर की कृपा होने के क्या करण हैं?

किसी कारणवश एक इंसान पर परमेश्वर की कृपादृष्टि होती है? परमेश्वर की कृपा कुछ विशेष लोगों पर क्यों होती है? यहाँ कुछ उत्तर दिये गए हैं जो मुझे बाइबल का अध्ययन करने से मिले हैं।

कृपा हमें सौंपे गए काम से जुड़ी होती है

परमेश्वर की कृपादृष्टि हमेशा हमें सौंपे गए कार्यों से जुड़ी होती है। हम में से हर एक के पास परमेश्वर की ओर से कुछ कार्य सौंपे गए हैं, और जब हम उन सौंपे गए कार्यों को पूरा करने लगते हैं, तो परमेश्वर की कृपा हम पर होती है।

यहाँ बाईबल से कुछ उदाहरण दिये गए हैं।

मरियम

लूका 1:30
'स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।"'

परमेश्वर मसीहा को जन्म देने के लिए किसी और युवा युवती को चुन सकते थे। लेकिन उन्होंने मरियम को चुना। वह किसी विशेष कार्य को पूरा करने के लिए—मसीहा को जन्म देने के लिए परमेश्वर की "कृपा पात्र" बन गई।

यीशु

लूका 2:52
'और यीशु बुद्धि और डील–डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।'

नहेम्याह

नहेम्याह पर परमेश्वर की कृपादृष्टि क्यों हुई? वह यरूशलेम की नगर दीवार को फिर से बनाने के लिए आगे बढ़ रहा था और इसलिए नहेम्याह ने परमेश्वर की कृपा का अनुभव किया।

यूसुफ

यूसुफ पर परमेश्वर की कृपादृष्टि क्यों हुई थी? क्योंकि स्वप्न को पूरा करने के उद्देश्य से अपने लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए वह प्रधान मंत्री बनने के कार्य में आगे बढ़ रहा था।

ऐस्तर

ऐस्तर को परमेश्वर की कृपा का अनुभव हुआ क्योंकि उसे यहूदी लोगों को छुटकारा दिलाने का काम सौंपा गया था। ऐस्तर एक अनाथ थी जिसके जीवन का अंत कुछ नहीं में हो सकता था। लेकिन परमेश्वर की कृपादृष्टि उस पर थी। उसे राजा क्षयर्ष की रानी होने के लिए चुना गया। और बिल्कुल सही समय पर जब वह राजा से विनती करने गई, और जब राजा ने एस्तेर रानी को आंगन में खड़ी हुई देखा, तब उस से प्रसन्न हो कर सोने का राजदण्ड जो उसके हाथ में था उसकी ओर बढ़ाया। तब एस्तेर ने निकट जा कर राजदण्ड की लोक को छुआ। "*तब राजा ने उस से पूछा, हे एसतेर रानी, तुझे क्या चाहिये? और तू क्या मांगती है? मांग और तुझे आधा राज्य तक दिया जाएगा*"

(ऐस्तर 5:3)। इस तरह परमेश्वर की कृपादृष्टि उस पर थी क्योंकि वह विशेष कार्य को पूरा करने जा रही थी। केवल बाद में ऐस्तर को एहसास हुआ कि वह एक विशेष कार्य को पूरा कर रही है जो परमेश्वर के लोगों को छुटकारा देगा।

इसलिए, जब भी हम किसी विशेष कार्य में संलग्न होते हैं, तब परमेश्वर की कृपा हम पर होती है। इसका अर्थ यह है कि अगर हम स्वयं के बल पर कार्य कर रहे हैं, तो यह हमें कृपा के इन दिव्य क्षणों को प्राप्त करने के लिए अयोग्य बनाता है। जबकि, जब हम परमेश्वर के कार्यों को करते हैं, तो हम परमेश्वर की कृपा पाने के योग्य बन जाते हैं। और परमेश्वर हम पर कृपा करते हैं क्योंकि उनके पास हमारे जीवनों में सौंपने के लिए कई कार्य हैं, जिन्हें वह चाहते हैं कि हम पूरा करें। इसलिए कभी-कभी अप्रत्याशित दरवाजे भी खुल जाते हैं और हम लोगों, स्थानों और चीजों तक पहुंच प्राप्त करते हैं जो शायद दूसरों के लिए संभव न हो। कभी-कभी हमारे हाथों में कहीं से धन आ जाता है। दूसरी बार, हम लोगों को अपने प्रभाव में आते हुए देखते हैं, यह कहते हुए कि, "हम इस मिशन का हिस्सा बनना चाहते हैं।" यह एक दिव्य कृपा है जो हमारे जीवन में आती है।

लेकिन हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि परमेश्वर की कृपा के एक पल या मौसम के बाद भी, हमें वह काम करते रहना है और हमें उस काम को पूरा करने के लिए स्वाभाविक रूप से वह सब करते रहना है जिसे परमेश्वर ने हमें सौंपा है। यह दिव्य कृपाष्टि का समय था जब राजा ने नहेम्याह के सभी अनुरोधों को स्वीकार कर लिया। लेकिन नहेम्याह को कड़ी मेहनत करके इसका पालन करना पड़ा, उसने बहुत सारे विरोध, झूठे आरोप, और आंतरिक समस्याओं आदि का सामना किया जब तक कि वह विशेष कार्य पूरा न हो गया।

ध्यान रखिये कि परमेश्वर ने आपके जीवन में जो कृपा की है वह

व्यर्थ न जाए। परमेश्वर ने शाऊल पर कृपा की थी उसने उसे गंवा दिया और परमेश्वर ने उस कार्य को पूरा करने के लिए किसी और (दाऊद) को चुना।

1 शमूएल 15:10,11,16-22
10 तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुँचा,
11 "मैं शाऊल को राजा बना के पछताता हूँ; क्योंकि उसने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया। तब शमूएल का क्रोध भड़का; और वह रात भर यहोवा की दोहाई देता रहा।
16 तब शमूएल ने शाऊल से कहा, "ठहर जा! और जो बात यहोवा ने आज रात को मुझ से कही है वह मैं तुझ को बताता हूँ।" उसने कहा, "कह दे।"
17 शमूएल ने कहा, "जब तू अपनी दृष्टि में छोटा था, तब क्या तू इस्राएली गोत्रों का प्रधान न हो गया? और क्या यहोवा ने इस्राएल पर राज्य करने को तेरा अभिषेक नहीं किया?
18 और यहोवा ने तुझे एक विशेष कार्य करने को भेजा, और कहा, 'जाकर उन पापी अमालेकियों का सत्यानाश कर, और जब तक वे मिट न जाएँ तब तक उनसे लड़ता रह।'
19 फिर तू ने किस लिये यहोवा की यह बात टालकर लूट पर टूट के वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है?"
20 शाऊल ने शमूएल से कहा, "नि:सन्देह मैं ने यहोवा की बात मानकर जिधर यहोवा ने मुझे भेजा उधर चला, और अमालेकियों के राजा को ले आया हूँ, और अमालेकियों का सत्यानाश किया है।
21 परन्तु प्रजा के लोग लूट में से भेड़–बकरियों, और गाय–बैलों, अर्थात् नष्ट होने की उत्तम उत्तम वस्तुओं को गिलगाल में तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि चढ़ाने को ले आए हैं।"
22 शमूएल ने कहा, "क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से
उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न
होता है?
सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से,
और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है।

कृपा एक निर्धारित समय से जुड़ी हुई है

भजन संहिता 102:13
तू उठकर सिय्योन पर दया करेगा; क्योंकि उस पर अनुग्रह करने का ठहराया हुआ समय आ पहुँचा है।

एक निर्धारित समय होता है जब किसी विशेष कार्य के लिए परमेश्वर हमारे जीवन में कृपादृष्टि करते हैं। एक समय—एक पल होता है जब हमारे जीवन में कृपा होती है और हम अचंभित हो जाते हैं कि बिना कुछ किये हम ऐसी कृपा का अनुभव कैसे कर सकते हैं। यह कृपा का मौसम है! हमारा समय उनके हाथों में है (भजन संहिता 31:15)।

कृपा के इन निर्धारित समयों के बीच हमारी तैयारी का समय होता है जो हमारे जीवन में आने वाली कृपा को संभालने के लिए हमें तैयार करता है। इस दौरान, हमें सौंपे गए विशेष कार्य के प्रति विश्वासयोग्य बने रहना है और इस विशेष कार्य को करने के लिए जो कृपा मिली है उसके साथ हमें उसे स्वाभाविक रूप से पूरा करना है। और जब हम पर कृपा होती है तो हमें उसका दुरूपयोग नहीं करना है, ताकि हम अगली कृपा के लिए तैयार रहें जो परमेश्वर हमारे जीवन में उंडेंलने वाले हैं।

कृपादृष्टि सत्यनिष्ठा से जुड़ी होती है

भजन संहिता 5:12
क्योंकि तू धर्मी को आशीष देगा;
हे यहोवा, तू उसको अपने अनुग्रहरूपी ढाल से घेरे रहेगा।

दानिय्येल 9:23
जब तू गिड़गिड़ाकर विनती करने लगा, तब ही इसकी आज्ञा निकली, इसलिये मैं तुझे बताने आया हूँ, क्योंकि तू अति प्रिय ठहरा है; इसलिये उस विषय को समझ ले और दर्शन की बात का अर्थ जान ले।

दानिय्येल 10:11,19
11 तब उसने मुझ से कहा, "हे दानिय्येल, हे अति प्रिय पुरुष, जो वचन मैं तुझ से कहता हूँ उसे समझ ले, और सीधा खड़ा हो, क्योंकि मैं अभी तेरे पास भेजा गया हूँ।नेसउ बज " मुझ से यह वचन कहा, तब मैं खड़ा तो हो गया परन्तु थरथराता रहा।
19 और उसने कहा, "हे अति प्रिय पुरुष, मत डर, तुझे शान्ति मिले; तू दृढ़ हो और तेरा हियाव बँधा रहे।" जब उसने यह कहा, तब मैं ने हियाव बाँधकर कहा, "हे मेरे प्रभु, अब कह, क्योंकि तू ने मेरा हियाव बँधाया है।"

कृपा सत्यनिष्ठा से जुड़ी है। दानिय्येल, एक ऐसा महान उदाहरण है जो सत्यनिष्ठा के लिए खड़ा था। कठिन परिस्थितियों में भी वह सत्यनिष्ठा में चला। परमेश्वर ने उसे अपना *"अति प्रिय"* कहा (दानिय्येल 10:19)। परमेश्वर धर्मियों को आशीष देगा (भजन संहिता 5:12)। इसलिए जब हम सत्यनिष्ठा में चल रहे होते हैं, तो हम परमेश्वर की कृपा से घिरे होते हैं। इसलिए, चाहें हमसे कोई भी मिले वे इस अदृश्य कृपा—कृपा की ढाल के संपर्क में आएंगे।

नीतिवचन 3:3,4
3 कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएँ;
वरन् उनको अपने गले का हार बनाना,
और अपनी हृदय रूपी पटिया पर लिखना।
4 तो तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का
अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।

नीतिवचन 12:2
भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है,
परन्तु बुरी युक्ति करने वाले को वह दोषी ठहराता है।

वास्तव में दो बातें हैं जिन्हें परमेश्वर चाहते हैं कि हम अपने हृदय में रखें।

1) दया, जो कि करूणा है और

2) सत्य, जो कि सच्चाई, सत्यनिष्ठा और ईमानदारी है।

परमेश्वर कहते हैं कि अगर हम इन दोनों बातों को बनाए रखें, तो हम परमेश्वर और मनुष्य के सामने उच्च सम्मान पाएंगे। इसलिए हमारे जीवन में परमेश्वर की कृपा तब आकर्षित करती है जब हम दया और सच्चाई के साथ चलते हैं।

कृपा, बुद्धि और समझ के साथ जुड़ी है

नीतिवचन 8:35
क्योंकि जो मुझे पाता है (बुद्धिमत्ता)**,**
वह जीवन को पाता है,
और यहोवा उससे प्रसन्न होता है।

नीतिवचन 13:15
सुबुद्धि के कारण अनुग्रह होता है,
परन्तु विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है।

नीतिवचन 14:35
जो कर्मचारी बुद्धि से काम करता है, उस पर राजा प्रसन्न होता है,
परन्तु जो लज्जा के काम करता है, उस पर वह रोष करता है।

कृपा, बुद्धि और समझ से जुड़ी है, क्योंकि जब हम बुद्धिमानी और समझ से चलने का चुनाव करते हैं, तो हम जीवन और कृपा भी पाते हैं। जब परमेश्वर जान जाते हैं कि वह जो देते हैं उसे हम सही तरीके से संभालते हैं, तो वह हम पर कृपा बरसाएंगे। इसलिए, हमें बुद्धिमानी और समझ को महत्व देना सीखना चाहिये, इस तरह हम अपने जीवन में परमेश्वर की कृपा को निर्धारित करते हैं।

भजन संहिता 106:4
हे यहोवा, अपनी प्रजा पर की प्रसन्नता के अनुसार मुझे स्मरण कर,
मेरे उद्धार के लिये मेरी सुधि ले,

भजन संहिता 119:58
मैं ने पूरे मन से तुझे मनाया है; इसलिये अपने वचन के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर।

नीतिवचन 22:1
बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है,
और सोने चाँदी से दूसरों की प्रसन्नता उत्तम है।

नीचे लिखे कामों को करने के लिए मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ:

- दिव्य कृपा पाने के लिए प्रार्थना करें।
- दिव्य कृपा के लिए स्वयं को तैयार करें।
- दिव्य कृपा पाने की अपेक्षा करें।

अपने पूर्ण हृदय से परमेश्वर से मांगिये क्योंकि दिव्य कृपा वह आशीष है जो आपके जीवन में अद्भुत कार्य कर सकती है। कृपा दृष्टि के समय में, कृपादृष्टि के मौसम में आप उन चीजों को प्राप्त कर सकते हैं जिसे धन द्वारा खरीदा नहीं जा सकता। यूसुफ एक कैदी से प्रधान मंत्री बनने के लिए कितना धन दे सकता था? रानी बनने के लिए ऐस्तर कितना धन दे सकती थी? अपने सारे निवेदन को पूरा करने के लिए नहेम्याह कितना धन दे सकता था?

अपनी नौकरी-पेशे में, व्यवसाय में, सेवकाई में, शिक्षा में या जीवन के किसी भी अन्य हिस्से में परमेश्वर से कहिये कि वह अपनी कृपा आपके जीवन में बरसायें। आप प्रभु से कृपा पाने के लिए विनती कर सकते हैं। और जब वह कृपा आप पर उंडेली जाएगी, तो एक ही पल में असाधारण चीजें हो जाएंगी, अवसरों के द्वार खुल जाएंगे, आपकी परिस्थितियाँ बदल जाएंगी, और वह आपके विलाप को नृत्य में बदल देंगे (भजन संहिता 30:11)।

प्रार्थना

सर्वशक्तिमान परमेश्वर,

मैं बुद्धिमानी और सत्यनिष्ठा के साथ चलूँगा। मैं दैवीय कृपा पाने के लिए खुद को तैयार कर रहा हूँ और मैं दैवीय कृपा पाने की अपेक्षा करता हूँ! इसके अलावा, आपकी कृपा के निर्धारित समय के उन अंतरालों के बीच, मैं आपकी बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य बना रहूँगा। मैं अगली कृपा के निर्धारित समय को गंवाना नहीं चाहता जब चीजें अचानक ही बदल जाएंगी।

यीशु के नाम में, आमीन!

4
परमेश्वर की कृपा बनाए रखना

हम पर परमेश्वर की कृपादृष्टि होना केवल अनुग्रह का कार्य है। परमेश्वर हम पर कृपा करते हैं और हम उस कृपा को पाने के लिए स्वयं को तैयार करते हैं। हालाँकि, इसके बाद हम क्या करते हैं यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। हम किस तरह परमेश्वर की कृपा को बनाए रखते हैं, यह तय करेगा कि हम अपने कामों में कितनी प्रगति कर रहे हैं और अंतत: परमेश्वर के उद्देश्य को कितना पूरा कर पाते हैं। इसके अलावा, परमेश्वर की कृपा को उचित रीति से बनाए रखना यह निर्धारित करेगा कि हम परमेश्वर की कृपा निरंतर पाते रहेंगे या नहीं, क्योंकि उनके राज्य में विश्वासयोग्यता हमें और अधिक कृपा पाने के लिए तैयार करेगी।

बाइबल में, हम ऐसे लोगों को देखते हैं जिन्होंने दिव्य कृपा द्वारा अच्छी सेवकाई को बनाए रखा। यूसुफ के कुछ उदाहरण जिसने दिव्य कृपा प्राप्त की और विदेश में प्रधान मंत्री बने, और वह प्रभु के प्रति ईमानदार बने रहे, अपना काम पूरा किया और यहाँ तक कि उन्होंने अपने भाइयों पर भी कृपा बनाए रखी जिन्होंने उनके साथ अन्याय किया था।

दाऊद ने दिव्य कृपा पाई जिसने उसे एक साधारण चरवाहे से इस्राएल में एक शक्तिशाली राजा बना दिया। यद्यपि उसने अपने जीवन में गलतियाँ की थीं, फिर भी दाऊद अंत तक प्रभु के प्रति प्रेम में और उनके भय में चलते रहे। उन्होंने अपने आस पास के लोगों का आदर किया और उस कृपा को अच्छी तरह से बनाए रखा जो परमेश्वर ने उनके जीवन में बरसाई थी।

नहेम्याह एक और असाधारण उदाहरण है। यरूशलेम की शहरपना (नगर सुरक्षादीवार) को फिर से बनाने और उनके अधिपति के रूप में स्वीकार किये जाने के अपने विशेष कार्य को पूरा करने के बाद भी, उन्होंने उन विशेषाधिकारों में शामिल होने से इंकार कर दिया जिसका वह लाभ उठा सकते थे। अपने शब्दों में, वह कहते हैं, *" फिर जब से मैं यहूदा देश में उनका अधिपति ठहराया गया, अर्थात् राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष से ले कर उसके बत्तीसवें वर्ष तक, बारह वर्ष, मैं और मेरे भाईयों ने अधिपति के हक़ का भोजन नहीं खाया। परन्तु पिछले अधिपति जो मुझ से पहले थे, वे प्रजा पर भार डालते थे, और उनसे रोटी, और दाखमधु, और इसके साथ चालीस शेकेल चाँदी लेते थे, वरन् उनके सेवक भी प्रजा के ऊपर अधिकार जताते थे; परन्तु मैं ऐसा नहीं करता था, क्योंकि मैं यहोवा का भय मानता था। जो प्रतिदिन के लिये तैयार किया जाता था वह एक बैल, छः अच्छी अच्छी भेड़ें या बकरियाँ थीं, और मेरे लिये चिड़ियाँ भी तैयार की जाती थीं; दस दस दिन के बाद भाँति भाँति का बहुत दाखमधु भी तैयार किया जाता था; तौभी मैं ने अधिपति के हक़ का भोज नहीं लिया, क्योंकि काम का भार प्रजा पर भारी था"* (नहेम्याह 5:14,15,18)।

ऐस्तेर ने दिव्य कृपा का अनुभव किया और रानी बन गई। और उन्होंने परमेश्वर के लोगों के लिए स्वेच्छा से अपने जीवन और प्रभाव के स्थान को जोखिम में डाल दिया ।

इसी तरह, कई अन्य लोग हैं जिन्होंने अपने जीवन में परमेश्वर की कृपा को अच्छी तरह से बनाए रखा।

जबकि, हम उन लोगों को भी देखते हैं जिन्होंने उस कृपा को बर्बाद कर दिया जो परमेश्वर ने उन पर की थी। परमेश्वर ने राजा सुलेमान पर कृपा करके उसे महान बुद्धि, धन, प्रभाव और शांति दी थी—वह स्त्रियों के प्रति अपने प्यार के कारण भटक गया था।

उसने इस्राएल में एक गौरवशाली शासन को बर्बाद कर दिया। राजा हिज्किकियाह यहूदा में एक अच्छा राजा था जिसने धार्मिकता की बेदारी और प्रभु को लौटते हुए देखा था। *"यहोवा उसके संग रहा, और जहाँ कहीं वह जाता था, वहाँ उसका काम सफल होता था।"* (2 राजाओं 18:7अ)। उसने यह भी देखा कि परमेश्वर ने उसे महान छुटकारा और विजय दी थी। फिर भी, अपने शासन काल के अंत में उसने बहुत बड़ी गलती की थी। परमेश्वर ने उसे जो दिया था उसकी रक्षा उसने नहीं की और इसे विरासत में अगली पीढ़ी को नहीं सौंपा। इसकी अपेक्षा, उसने बेबीलोन के राजा के सामने यहूदा को उजागर कर दिया, जिसके कारण अंत में बेबीलोन के लोगों ने उस देश पर अधिकार जमा लिया (2 राजाओं 20:12-20)।

यहाँ कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं जिन्हें हमें करना है ताकि हमारे जीवन में परमेश्वर की जो कृपा है उसे उचित रीति से बनाए रख सकें।

परमेश्वर को सारी महिमा दें

भजन संहिता 115:1
हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं,
वरन् अपने ही नाम की महिमा,
अपनी करुणा और सच्चाई के निमित्त कर।

अपने जीवन में परमेश्वर की कृपा प्राप्त करने वालों के रूप में, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिये कि हम अपनी आँखें उन पर लगाए रखें और उनकी दया से हमने जो कुछ प्राप्त किया है, उसके लिए उन्हें स्तुति, आदर और महिमा देते रहें।

दिव्य कृपा की आशीष साझा करें

नहेम्याह 8:10
फिर उसने उनसे कहा, "जाकर चिकना चिकना भोजन करो और मीठा मीठा

रस पीयो, और जिनके लिये कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास भोजन सामग्री भेजो; क्योंकि आज का दिन हमारे प्रभु के लिये पवित्र है; और उदास मत रहो, क्योंकि यहोवा का आनन्द तुम्हारा दृढ़ गढ़ है।"

जब हम अपने ऊपर परमेश्वर की कृपा का आनंद ले रहे हों, तो हमें इसे अपने आस पास के लोगों के साथ साझा करने का ध्यान रखना चाहिये। हमारे आस पास के लोग जीवन के विभिन्न मौसम में से गुजर रहे होंगे—शायद कुछ संघर्ष से, कुछ जरूरतों से और चुनौतियों से। हमारे जीवन में जो अच्छाइयाँ हैं उन्हें हमें उन लोगों के जीवन में डालना चाहिये। परमेश्वर हमें आशीष देते हैं, ताकि हम एक आशीष बन सकें।

परमेश्वर की कृपा का दुरूपयोग न करें

परमेश्वर की कृपा केवल अपने आप पर लुटाने के लिए नहीं है। और परमेश्वर ने हम पर जो कृपा की है उसका ना तो हमें दुरूपयोग करना है और ना ही उसे बर्बाद करना है। हम पर परमेश्वर की कृपा हुई है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि हम दूसरों से बेहतर हैं। हम पर परमेश्वर की कृपा हुई है तो इसका यह मतलब नहीं है कि वह हमें दूसरों से ज्यादा प्यार करते हैं।

बढ़ते रहें

जबकि कृपा के मौसम का आनंद लिया जाना है, मगर इसका मतलब परमेश्वर के साथ अपनी यात्रा को "पार्किंग स्थल" बनाना नहीं है। परमेश्वर चाहते हैं कि हम महिमा से महिमा में उनके स्वरूप में बदलते जाएं। कृपा के हर एक मौसम में हमें और अधिक ऊँचाई में बढ़ना तथा परमेश्वर की और अधिक गहराई में जाना है। इसे हमें उनके राज्य के अभिषेक, अनुशासन और बलिदान के बड़े स्तरों में आगे बढ़ाना चाहिये। जितना अधिक वह मुझे देते हैं, उतना ही अधिक मैं

अपने आप को उनकी वेदी पर रखता हूँ।

जो दिया गया है उसकी रक्षा करें

कृपा की रक्षा की जानी चाहिये। हमें परमेश्वर ने जो दिया है, उसकी रक्षा उचित रीति से करनी चाहिये। एक शत्रु है जो परमेश्वर की भलाई को विनाश के कारणों में बदलना चाहता है। शत्रु चोरी, हत्या और नाश करना चाहता है। यह तब हुआ जब राजा दाऊद ने सफलता देखी और थोड़ी देर के लिए "अपने हथियार को नीचे रखने का निर्णय लिया" और वह बेतशेदा के साथ किए गए कार्य द्वारा पाप में पड़ गया। इसलिए, हमें अपने जीवन पर की गई कृपा की लगातार रक्षा करने के लिए सतर्क रहना चाहिये। सामान्यत; कृपा सभी तरह के लोगों को हमारी ओर आकर्षित करती है। उनमें से सभी लोग सही उद्देश्यों के साथ नहीं आते। कई लोग अपने स्वयं के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हमारे जीवन पर की गई परमेश्वर की कृपा का लाभ उठाने के विचार से आते हैं। अपनी कृपा के मौसम के दौरान की जाने वाली "साझेदारी" और "गठबंधन" में सावधान रहिये। समझौता करने से इंकार कर दीजिये और हमेशा प्रकाश में चलिये। ऐसे लोगों से दूर रहिये जिनके हृदय, मंशा ,और उनके जीवन के उदाहरण या मानदंड परमेश्वर के वचन के अनुसार नहीं हैं।

इसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाएं

कृपा एक विरासत है जिसे हमें संभाल कर रखना चाहिये और आप इसे आने वाली पीढ़ियों को दे सकते हैं। जो लोग हमारे बाद आते हैं और जब हम उन्हें परमेश्वर की भलाई के बारे में और उनकी भलाई को बनाकर रखने के बारे में सिखाते हैं, तो हम उन्हें उस कृपा को प्राप्त करने और इसमें चलने के लिए तैयार करते हैं जिसका हमने अनुभव किया है। अगर हम दैवीय कृपा का अनुभव करते हैं और इसे

आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने में असफल हो जाते हैं कि परमेश्वर की कृपा में चलने के लिए क्या करना पड़ता है, तो हमारे पास जो कुछ भी है वह निश्चित रूप से बर्बाद और कम हो जाएगा। किन्तु, अगर आने वाली पीढ़ियों को सिखाया जाए कि हमें परमेश्वर की कृपा में कैसे चलना है, तो हमारे साथ जो शुरु हुआ था वह बढ़ता रहेगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य पूर्ण होते जाएंगे।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" **(रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा " **(रोमियों 10:9)|**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापों का

दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें**: apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें : **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses—Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत शृंखला का समाधान करती है।

किशोरों
व्यक्तिगत समायोजन
सम्बंधपरक चुनौतियां
शिक्षा में कम सफलता पाने वाले
कार्य सम्बंधित मुद्दे
परिवार/दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक
आत्मिक समस्याएं
माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी

व्यवहार सम्बंधी विकार
व्यक्तित्व विकार
मनोवैज्ञानिक/भावनात्मक समस्याएं
तनाव / आघात
शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल
जिंदगी की सीख

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* ***apcwo.org/give***

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for

"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

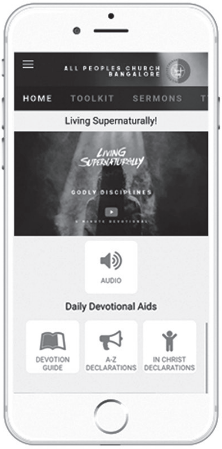

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी)में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

परमेश्वर हर व्यक्ति से एक जैसा प्रेम करते हैं और वह एक व्यक्ति विशेष पर ही अपनी कृपा नहीं करते। फिर भी, मनुष्यों के साथ व्यवहार करते समय हम पाते हैं, कि वह कुछ लोगों पर या लोगों के समूहों पर किसी निश्चित समय में, या विशेष मौसम में, या उनके जीवन के किसी विशेष पलों में अपनी कृपा करते हैं।

दिव्य कृपा परमेश्वर की ओर से एक वरदान है जो किसी व्यक्ति पर होती है, और यह उस व्यक्ति को प्रभाव, लोगों, स्थानों या चीजों तक पहुंचने में सहायता प्रदान करती है तथा असामान्य अवसर, प्रशंसा और दैवीय हस्तक्षेप प्रदान करती है। और मैं इसी के बारे में आपको जागृत करना चाहता हूँ, ताकि हम परमेश्वर की दिव्य कृपा पाने की अपेक्षा कर सकें।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org